दिनांक :- 01-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डा० फारूक आजम (अतिथी शिक्षक)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

एकाई वा। प्रथम

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- आन्ध्र सातवाहन (मौर्योत्तरकाल स्त्रोत)

पुराणो में सातवाहन वंश का संस्थापक सिमुक (सिंधुक, सिसुक अथवा शिप्रक) को माना गया है तथा उसे आन्ध्र भृत्य आन्ध्रजातीय कहा गया है जबकि अपने अभिलेखो में इस वंश के राजाओ ने स्वंय को सातवाहन ही कहा है।

प्लिनी ने सातवाहनो की चर्चा की है।

Scanned with CamScanner

सातवाहनो की राजकीय भाषा प्राकृत थी।
इस वंश के पहले महत्वपूर्ण शासक शातकर्णी प्रथम ने दक्षिणाधिपति तथा अप्रतिहतचक्र की उपाधि ली।
प्रो० एच० सी० राय चौधरी के अनुसार सातवाहनो की मुख्य शाखा में 19 शासको ने 300 वर्षो तक शासन किया। शातकर्णी प्रथम ने पश्चिमी मालवा, अनूप (नर्मदा घाटी) तथा विदर्भ के प्रदेशो पर विजय प्राप्त की विदर्भ को उसने शुंग शासको से छीना था।
पूर्वी मालवा पर उसके अधिकार की पुष्टि वाशिष्ठी पुत्र आनंद के सांची स्तूप के तोरण द्वारापर उत्कीर्ण अभिलेख से मिलता है। वशिष्ठीपुत्र आनंद उसके समय कारीगरो का मुखिया था।
शातकर्णी प्रथम के समय खारवेल ने आक्रमण किया इसने दो अश्वमेध तथा राजसूय यज्ञो का अनुष्ठान

किया। अश्वमेध यज्ञ के पश्चात उसने अपनी
पत्नी नागनिका के नाम पर रजत मुद्राएं अंकित
करवाई। इनके ऊपर अश्व की आकृति मिलती है।
इनमें शातकर्णी प्रथम तथा गौतमीपुत्र शातकर्णी के
मध्य 19 शासकों का विवरण मिलता है। इनमें हाल
नामक शासक अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह शासक
शांति तथा संस्कृति का उपासक था। उसने गाथा
सप्तशती नामक मुक्तक काव्य की रचना प्राकृत
भाषा में की। उसकी सभा में बृहद्कथा के रचयिता
गुणाढ्य तथा कातंत्र नामक संस्कृत व्याकरण के
रचयिता शर्ववर्मन का निवास था।
गौतमीपुत्र शातकर्णी: (106ई० - 130ई०) पुराणों के
अनुसार गौतमी शातकर्णी सातवाहन वंश का तेइस
वाँ राजा था। इसके पिता का नाम शिवस्वाति

शिवस्वाति तथा माता का नाम गौतमी बालश्री था। इसके अभिलेख में दावा किया गया है कि इसने एक शक शासक नहपान को पराजित किया नासिक से चाँदी के 8 हजार सिक्के प्राप्त हुए है जिनकी एक तरफ गौतमी पुत्र शातकर्णी का नाम मिलता है। अतः उसका दावा सही प्रतीत होता है।

नहपान को पराजित करने के पश्चात उसने नासिक के बौद्ध संघ को अजकालकीय नामक क्षेत्र दान में दिया।

आवश्यक सूत्र की टीका निर्युक्ति में उल्लेखित एक गाथा से पता चलता है कि इस सातवाहन शासक ने नहपान की राजधानी भाकच्छ पर आक्रमण कर उसके कोष पर अधिकार कर लिया। गौतमी पुत्र शातकर्णी के पुत्र पुलुमावी के नासिक

Scanned with CamScanner

गुहालेख से गौतमीपुत्र द्वारा जीते गये निम्नांकित क्षेत्रों का उल्लेख मिलता है - ऋषिका, अस्मक, मूलक सुराष्ट्र, कुकुर, अपरान्त, अनूप, विदर्भ, आकर, अवन्ति इसने नासिक जिले में वेणाकटक नामक एक नगर का निर्माण करवाया था। इसने राजराज, महाराज, स्वामीवर - वरण विक्रम चारु विक्रम आदि उपाधियां ली थी। गौतमीपुत्र दावा करता है कि उसके घोड़े तीन समुद्र का पानी पीते थे

वशिष्ठी पुत्र पुलुमावी :- वशिष्ठिपुत्र - गौतमीपुत्र शातकर्णी का उत्तराधिकारी था वह शक शासक रुद्रदामन (130-150 ई०) का समकालीन था। दोनों के मध्य अनवरत संघर्ष चलता रहा किंतु जैसाकि कन्हेरी अभिलेख से ज्ञात होता है कि वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी का विवाह रुद्रदामन की पुत्री से हो गया।

Scanned with CamScanner

पुलुमयी अकेला ऐसा शासक है जिसका उल्लेख अम
रावती से प्राप्त एक अभिलेख में हुआ है। इसी
काल में अमरावती के स्तूप का संवर्द्धन हुआ तथा
उसके चारो ओर वेदिनी बनाई गई। इसे भी दक्षिणा
पथेश्वर कहा गया है। उसके कुछ सिक्को पर दो पत
वारो वाले जहाज का चित्र बना हुआ है।
टॉलेमी के विवरण में इस शासक को सिरो पोलिमेओस
कहा गया है।

यज्ञश्री शातकर्णी : (१७४ ई० - २०३ ई०)

यज्ञश्री इस वंश का अंतिम शक्तिशाली शासक था
इसका संभवतः वाणिज्य व्यापार से गहरा जुड़ाव रहा
था क्योंकि इसके सिक्के पर नाव का चित्र अंकित है।
सातावाहन राज्य की स्थापना पहले महाराष्ट्र क्षेत्र में
हुई और इसी क्षेत्र में इसका प्रसार दक्षिण एवं पूर्व
की ओर अर्थात कर्नाटक एवं आंध्रक्षेत्र की ओर
हुआ

Scanned with CamScanner

तीसरी सदी ई० तक साम्राज्य का अंत हो गया औ

इसी क्षेत्र मे इसका उत्तरी महाराष्ट्र क्षेत्र में वाका

टक राज्य स्थापित हो गया।

चेदि वंश :- मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात कलिंग

क्षेत्र मे चेदि वंश की स्थापना हुई। संभवतः इस वंश का

संस्थापक महामेघवाहन नामक व्यक्ति था। इस वंश का

प्रधान शासक खारवेल थे उसने भुवनेश्वर के पास उदय

गिरी की पहाड़ी मे हाथी गुम्फा अभिलेख खुदवाया

जिससे इस वंश की जानकारी मिलती है

महाराज उपाधि का प्राचीनतम उल्लेख हाथीगुम्फा

अभिलेख से प्राप्त होता है

लगभग 28 ई० पूर्व मे उसका राज्याभिषेक हुआ

उसने कलिंगाधिपति एंव कलिंग चक्रवर्ती की

उपाधियां ग्रहण की है।